[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3275

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

''शहरी गंदी बस्तियों में पर्यावरण संबंधी समस्याएँ''
(खण्डवा शहर के संदर्भ में)

सुशीला गायकवाड़
माखनलाल चतुर्वेदी शासकीय कन्या महाविद्यालय, खण्डवा

वर्तमान में हम जिस वातावरण एवं परिवेश द्वारा चारों ओर से घिरे है उसे पर्यारण कहते है। पर्यावरण में सभी घटकों का निश्चित अनुपात में संतुलन आवश्यक है, किन्तु मनुष्य की तीव्र विकास की अभिलाषा एवं प्रकृति के साथ छेड़छाड़ के कारण यह संतुलन धीरे–धीरे समाप्त हो रहा है।

पृथ्वी पर निरंतर बढ़ती जनसंख्या आज विश्व में चिंता का प्रमुख कारण बन रही है, क्योंकि जनसंख्या वृद्धि ने लगभग सभी देशों को किसी न किसी प्रकार से प्रभावित किया है और उनकी प्रगति में बाधाएं उत्पन्न की है। जनसंख्या का दबाव विकसित देशों में तो कुछ अधिक नहीं है, किंतु विकासशील व अविकसित देशों में स्थिति बहुत अधिक दयनीय है। जनसंख्या वृद्धि की यह दर चिंताजनक है, क्योंकि निरंतर विकास के बावजूद भी हमारी अधिकांश जनसंख्या निम्न जीवन स्तर जी रही है। खाद्यान उत्पादन में अपूर्व वृद्धि के बावजूद सभी को पोषक उपलब्ध नहीं है। अधिक स्थिति दयनीय हो रही है। संसाधन समाप्त हो रहे है, ऊर्जा का संकट है, पेयजल की कमी और पर्यावरण प्रदुषित है। बढ़ती जनसंख्या के कारण वनों का विनाश भूमिगत जल का अनावश्यक दोहन, आवासीय कॉलोनियों का प्रसार, ऊर्जा की कमी आदि समस्याएँ उत्पन्न हो गई है।

कुल जनसंख्या के साथ नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत लगातार बढ़ता जा रहा है। औद्योगिक क्रांति के पश्चात् औद्योगीकरण व नगरीयकरण की तीव्र प्रक्रिया ने विशाल नगरों व औद्योगिक केंद्रों का निर्माण किया जिसके कारण नगरों का विकास हुआ, परिणाम स्वरूप जनसंख्या के एकीकरण को प्रोत्साहन मिला और अधिकांश जनसंख्या विशाल नगरों में तथा औद्योगिक केंद्रों में एकत्रित हो गई। इन विशाल नगरों तथा औद्योगिक केंद्रों में बढ़ती हुई जनसंख्या के परिणामस्वरूप आवास की समस्या उत्पन्न होने लगी। बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए आवास की समुचित व्यवस्था न होने के कारण गंदी बस्तियों का निर्माण हुआ। आज ऐसा कोई भी कोई भी औद्योगिक नगर नहीं है जहाँ कि गंदी बस्तियाँ देखने को न मिलती हो। अतः यह कहना अतिश्योक्ति होगी कि गंदी बस्तियां आधुनिक औद्योगिक नगरीकरण की परिचायक है।

वास्तव में गंदी बस्तियां शहरी क्षेत्र के उन भागों को कहा जा सकता है, जिनमें टूटे फूटे गंदे मकान हो तथा अस्वस्थपूर्ण वातावरण में लोग निरंतर जीवन यापन करते हो अर्थात् गंदी बस्ती से तात्पर्य किसी देश या नगर की उन बस्तियों से होता है जहाँ सफाई का नामोनिशान न हो, मकान में सूर्य का प्रकाश न पहुँचता हो, बस्ती में नमी रहती हो, बस्ती में प्रकाश का प्रबंध न हो, तथा स्वच्छ वायु के लिए लोग तरसते हो, आसपास का वातावरण दुषित हो अर्थात् वैश्यालय, जुआघर, शराब की दुकान आदि पास ही हो, गली कुचे में बसी हुई ऐसी बस्तियों को ही मलिन या गंदी बस्ती कहा जाता है।

गंदी बस्ती क्षेत्र अधिनियम 1956 के अनुसार :– '' बेढ़ंगे तरीके से बसी हुई अव्यवस्थित रूप से विकसित और साधारणतः उपेक्षित क्षेत्र जो सघन बसा होता है। जिसमें बिना मरम्मत के उपक्षित मकानों की अधिक संख्या तथा संचार के साधन अपर्याप्त होते है। जिनमें साफ–सफाई के प्रति उदासीनता होती है, गंदी बस्ती कहलाती है। ''

अतः कह सकते है कि गंदी बस्तियां वे है जो अव्यवस्थित हो, गंदे पानी की नालियां सड़ रही हो और उनमें सफाई की कोई व्यवस्था न हो।

ये और ऐसी ही अनेक विशेषताओं के कारण भारत में ही नहीं विश्व में भी गंदी बस्तियों में व्यक्ति के नारकीय जीवन की इसी पृथ्वी पर कल्पना को साकार रूप में देखा जा सकता है। स्व. पं. जवाहर लाल नेहरू ने 2 अक्टूबर 1952 को कानपूर शहर की श्रमिक बस्तियों का निरीक्षण किया था तथा उन्हें 'नरककुण्ड' नाम से संबोधित किया।

भारत में इन गंदी बस्तियों की कमी नहीं। औद्योगिकरण की तीव्र गति होने के कारण नगरों में जनसंख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। और आवास व्यवस्था की उस अनुपात में व्यवस्था नहीं हो पा रही है।

फलस्वरूप जनसंख्या के एकत्रीकरण से नगरों में गंदी बस्तियाँ निरंतर बढ़ती जा रही है। भारत के विशाल औद्योगिक नगरों में वर्तमान में जनसंख्या का घनत्व प्रतिवर्ग मील, दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। भारत के कुछ विशाल नगरों की स्थिति जहाँ जनसंख्या का दबाव बढ़ रहा है।

1. मुम्बई 48,400 प्रतिवर्ग मील
2. जयपुर 48,400 प्रतिवर्ग मील
3. कोलकाता 24,408 प्रतिवर्ग मील
4. अमृतसर 24,900 प्रतिवर्ग मील
5. चैन्नई 22,300 प्रतिवर्ग मील

आंकड़ों से स्पष्ट है कि बढ़ते हुए दबाव के कारण आवास के लिए भूमि की कमी, मूल्य वृद्धि तथा श्रमिकों को अपने कार्यस्थल के समीप रहने की आवश्यकता ने जनसंख्या के एकीकरण को प्रोत्साहन दिया है। जिसके फलस्वरूप गंदी बस्तियां निरंतर निर्मित होती जा रही हैं।

वर्तमान में कुछ विशाल औद्योगिक नगरों में विशाल गंदी बस्तियों की स्थिति इस प्रकार हैः–

1. **धारावी मुम्बई (गंदी बस्ती) :–** मुम्बई की यह गंदी बस्ती एशिया की सबसे बड़ी गंदी बस्ती कही जाती है जिसे चाल कहा जाता है। यह 1.75 किलोमीटर के एरिया में फैली हुई है। इन चालों में श्रमिक गोदामों में माल के समान भरे रहते है। मुम्बई की गंदी बस्तियों के संबंध में शाही कमीशन ने कहा था कि एक कमरे में चार गृहणियां निवास करती है, और चार कोने में चार चुल्हे बने होते है, तथा पूरा कमरा धुएँ से काला रहता है।
2. **भालसवा गंदी बस्ती (दिल्ली) :–** भालसवा दिल्ली शहर की वह गंदी बस्ती है, जहाँ दिल्ली की 20 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है, तथा यह स्थान महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित स्थान माना जाता है। इन गंदी बस्तियों को दिल्ली में 'कटरा' कहा जाता है।
3. **नोचिकुप्पम गंदी बस्ती (चैन्नई) :–** चैन्नई की सबसे बड़ी गंदी बस्ती है, जिसमें 1300 झोपड़ियों वाली बस्ती में 5000 हजार से भ अधिक लोग निम्नतर जीवन व्यतीत कर रहे हैं। चैन्नई में गंदी बस्तियों को 'चेरी' कहा जाता है।
4. **वसन्ती गंदी बस्ती (कोलकाता) :–** कोलकाता की इस गंदी बस्ती में लगभग 1/3 जनसंख्या निवास करती है। यह कोलकाता की सबसे बड़ी गंदी बस्ती है। कोलकाता में गी बस्ती को 'बस्ती' कहते है।
5. **राजेन्द्रनगर (बैंगलोर) :–** ग्रीन सीटी के नाम से जानी जाने वाली बैंगलोर सीटी की राजेन्द्रनगर बस्ती सबसे बड़ी गंदी बस्ती है, जिसमें बैंगलोर की 20 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।
6. **इन्दिरामनगर (हैदराबाद) :–** हैदराबाद में स्थित इन्दिरामनगर वह गंदी बस्ती है, जिसमें लगभग 6 लाख लोग निवास करते है।
7. **सरोजनगर (नागपूर) :–** नागपूर नगर 1.6 सौ हेक्टेयर भूमि पर बसी इस गंदी बस्ती में लगभग 1 लाख 42 हजार से भी अधिक लोग निवास करते है।
8. **मेहबल्लाहपूर (लखनऊ) :–** लखनऊ शहर की इस गंदी बस्ती में लगभग 20 हजार से अधिक लोग निवास कर रहे है।
9. **परिवर्तन गंदी बस्ती (अहमदाबाद) :–** अहमदाबाद में सूत मिलों की अधिकता के कारण यहाँ गंदी बस्तियों की अधिकता है। परिवर्तन नामक इस गंदी बस्ती में लगभग साढ़े चार लाख लोग निवास करते है।
10. **सतनामी नगर (भोपाल) :–** मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में सतनामी नगर, रूहालनगर, शान्तिनगर आदि गंदी बस्तियाँ है, जिनमें व्यक्ति जानवर से भी बद्तर जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

11. **कानपूर :–** कानपूर में भी गंदी बस्तियों का जमघट है, इन गंदी बस्तियों को कानपूर में ''अहाते'' कहते है। इन गंदी बस्तियों की दशा अत्यन्त चिन्ताजनक है। शाही कमीशन ने अहातों के बारे में लिखा है कि यह प्रायः एक कमरे का मकान होता है। जिसकी लम्बाई चौड़ाई 10'8 फुट होती है, न तो इसमें बरामदा होता है न फर्श होता है। प्रत्येक कमरे में तीन चार परिवार रहते है। कहीं भी स्वच्छ, वायु तथा प्रकाश का प्रबंध नहीं होता है। इसीलिए पं. जवाहर लाल नेहरू ने इन्हें 'नरक कुण्ड' कहा था।

भारत के विभिन्न महानगरों और नगरों में गंदी बस्तियों की संख्या मुम्बई – 140, दिल्ली – 1010, कानपूर – 135, चैन्नई – 311, इलाहाबाद – 80, रायपूर भिलाई – 37 ग्वालियर – 34 तथा इन्दौर में मात्र दो ही गंदी बस्तियाँ है। गंदी बस्तियां मानव व समाज के लिए अभिशाप हैं। बढ़ती आबादी एवं इस्तेमाल करो और फेको की तेजी से पनपती संस्कृति के कारण अधिकतर महानगर और नगर कचरों के ढेर में बदलते जा रहे है। कचरों के इन्हीं ढेर के आसपास गंदी बस्तियाँ पनपने लगती है। या ये कहे कि गंदी बस्तियां इन्हीं कचरों के ढेर पर रहने के लिए मजबूर है। गंदी बस्तियों में रहने वाले अधिकांश मजदूर या छोटे मोटे काम करने वाले व्यक्ति होते है। कई बार तो बस्तियाँ इन्हीं उद्योगों के आसपास पनपती है। और उद्योगों से निकले समस्त अपशिष्ट जो कि पर्यावरण प्रदुषण का मुख्य कारक है। इनके जीवन को भी कष्टप्रद बना देती है। जनसंख्या बढ़ने से और शहरीकरण के फलस्वरूप मनुष्य के मल निपटान की समस्या ने उग्र रूप धारण कर लिया है। इस मल को प्रायः जल के साथ नदियों और नालों में बहा दिया जाता है, जिन पर ये गंदी बस्तियाँ अपना बसेरा बना लेती है, इसी मल के मिश्रण से जल पीने योग्य नहीं रह पाता है, किंतु गंदी बस्ती के निवासियों को इसी जल को पीने हेतु इस्तेमाल करना पड़ता है। जो अनेकों बिमारियों का घर होता है।

ये और ऐसी ही अनेको समस्याएँ जिनसे पर्यावरण प्रदुषण का गंदी बस्तियों से सीधा संबंध है को जानने हेतु हमने खण्डवा शहर की गंदी बस्तियों में एक शोध अध्ययन किया। खण्डवा शहर की गंदी बस्तियों के अवलोकन से प्राप्त परिणामों के आधार पर और रहवासियों से की गई, चर्चा के आधार पर गंदी बस्तियों में निम्न पर्यावरण संबंधी समस्याएँ एवं सामाजिक समस्या है।

1. **स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ :–** चर्चा से ज्ञात हुआ कि खण्डवा शहर की गंदी बस्तियों में स्वास्थ्य संबंधी समसयाओं के अंतर्गत वहां के निवासियों में बिमारियों का प्रकोप बढ़ रहा है। उनकी कार्यक्षमता में कमी आयी है, दुषित वातावरण के कारण संक्रामक रोगों की अधिकता एवं कुपोषण जैसी समस्या ने मुंह फाड़ा है। जिसने इन बस्तियों के रहवासियों को शारीरिक व मानसिक रूप से रोगी बना देती है।
2. **आधारभूत सुविधाओं का अभाव :–** इन गंदी बस्तियों में संबंध जल, स्वच्छता, पक्की सड़के, पक्के मकान, बिजली और स्वच्छ वातावरण का अभाव पाया गया। चूंकि शहरों से आने वाले कचरों को भी यहीं फेंका जाता है। जहाँ ये बस्तियाँ बसी हुई होती है। जिससे कचरे के ढेर जानवर और बच्चे एक जैसे दिखाई देते है।
3. **शिशुओं व महिलाओं की मृत्युदर का अधिक होना :–** इन गंदी बस्तियों में स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं का अभाव एवं प्रदुषित वातावरण के कारण नवजात बच्चों पर इसका अधिक प्रभाव पड़ता है एवं साथ ही महिलाओं को भी उचित चिकित्सा के अभाव में अनेकों बिमारियों को सहना पड़ता है। इस कारण बच्चे और महिलाओं की अकारण ही मौत हो जाती है।
4. **निर्धनता व बेरोजगारी :–** इन गंदी बस्तियों में पाया गया कि शिक्षा का अभाव व नशे की बुरी आदतों के कारण निर्धनता बरकरार रहती है। अच्छे भोजन, स्वच्छ वातावरण के अभाव से इनकी कार्यक्षता भी कम होती जाती है जो बेरोजगारी को बढ़ावा देती है।
5. **असामाजिक कार्य को बढ़ावा :–** अध्ययन से ज्ञात हुआ कि इन गंदी बस्तियों में असामाजिक कार्य अधिक मात्रा में किए जाते है, जैसे चोरी करना, जुआ खेलना, पुरूषों का दिनभर घर में ही रहना और नशे की हालत में अश्लील हरकते हरना। बच्चों का शोषण करना खास कर लड़कियों का।
6. **सामाजिक व आर्थिक विकास में बाधा :–** इन बस्तियों के निवासियों को समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है, क्योंकि ये सभी किसी न किसी अपराध में संलग्न रहते है। और समाज की मुख्यधारा से

जुड़ नहीं पाते है। आर्थिक शोषण भी इन्हीं का अधिक संख्या में किया जाता है। जिससे इनके जीवन स्तर में कोई सुधार नहीं हो पाया है।

7. **जागरूकता :–** शिक्षा के अभाव एवं अपराधी प्रवृत्ति के कारण ये सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं जैसे – शिक्षा संबंधी, स्वास्थ्य से संबंधी, पर्यावरण से संबंधी, स्वच्छता संबंधी के बारे में अज्ञात रहते है, और इन्हें इसका लाभ नहीं मिल पाता है। इनसे जुड़ी योजनाओं का लाभ अन्य समुदाय के व्यक्तियों द्वारा ही उठा लिया जाता है।

इस प्रकार अनेकों समस्याओं से घिरी रहती है, ये गंदी बस्तियाँ।

सुझाव

1. गंदी बस्तियों में साफ–सफाई के लिए कठोर नियमों का सख्ती से पालन करवाना।
2. गंदी बस्तियों के रहवासियों के लिए अनिवार्य शिक्षा की जाना जिससे इनमें अपने प्रति जागरूकता पैदा हो।
3. इन गंदी बस्तियों का पुनःनिर्माण किया जाये जहाँ हवा, पानी एवं प्रकाश की समुचित व्यवस्था की जाए।
4. नई गंदी बस्तियों के निर्माण पर सख्ती से रोक लगाई जाए।
5. इन बस्ती के बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ रोजगार मूलक प्रशिक्षण दिया जाए।
6. जिन अभियानो को सरकार के माध्यम से शहरों में सुधार चलाया जाता है उन्हें पहले गंदी बस्तियों पर चलाया जाए उसके पश्चात् पूरे शहर पर लागू किया जाए।
7. महिलाओं को विशेषकर शिक्षित किया जावे, क्योंकि शिक्षित माँ पूरे परिवार को शिक्षित कर सकती है।

निष्कर्ष

पर्यावरण ईश्वर प्रदत्त एक अमूल्य उपहार है। जो संपूर्ण मानव समाज का एकमात्र एवं अभिन्न अंग है। प्रकृत्ति द्वारा प्रदत्त अमूल्य भौतिक तत्वों पृथ्वी, जल, आकाश, वायु एवं अग्नि से मिलकर पर्यावरण का निर्माण हुआ है। यदि मानव समाज प्रकृति के नियमों का भलीभांति अनुसरण करें तो उसे कभी भी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वायु, जल, मिट्टी, पेड़–पौधों, जीव–जंतुओं आदि पर निर्भर ओर इनका दोहन नहीं करना पड़ेगा।

वर्तमान युग औद्योगीकरण और मशीनी युग है। जहाँ आज हर काम को सुगम और सरल बनाने के लिए मशीनों का उपयोग होने लगा है। वहीं पर्यावरण का उल्लंघन भी हो रहा है। परिणामस्वरूप प्रकृति कई आपदाओं का शिकार होती जा रही है। इस प्रकार प्राकृतिक विपदाओं के कारण गंदी बस्तियों के विकास ने समाज के सामने एक नई समस्या को जन्म दिया है। इन गंदी बस्तियों की दुर्दशा किसी से नहीं छिपी हुई है। सरकारी प्रयासों के बावजूद इनमें कोई सुधार नहीं हो पा रहा है। आवश्यकता है इन बस्तियों पर पुनः विचार करने की सरकार को कोई भी योजना बनाने से पूर्व इन बस्तियों के उत्थान के विषय पर सोचना होगा। स्मार्ट सीटी और स्वच्छ भारत अभियान से भी पहले इन गंदी बस्तियों की साफ–सफाई की ओर ध्यान देना होगा, निर्मल गांव की अपेक्षा निर्मल बस्तियों का निर्माण करना होगा। तभी इन बस्तियों में रहने वाले व्यक्तियों को इस नरक से छुटकारा मिल पाएगा।

संदर्भ

1. *श्रीवास्तव ए.पी. – समाजशास्त्र।*
2. *तिवारी शारदा – नगरीय समाजशास्त्र।*
3. *विभिन्न वेबसाइट्स।*
4. *राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी समाधान – 2008*